राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड राज्य के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों हेतु

उच्च शिक्षा के प्रथम तीन वर्षों के लिए साझा न्यूनतम पाठ्यक्रम

स्नातक-हिन्दी पाठ्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत उत्तराखण्ड - २६२३१०

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में, तथा उत्तराखण्ड राज्य की शैक्षिक आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को केंद्र में रखकर , हिन्दी विषय में इस त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की संरचना की गई है। इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक , संरचनात्मक एवं व्यावहारिक पक्षों से गहनतापूर्वक परिचित कराना , उन्हें समृद्ध हिन्दी साहित्य की वैचारिक एवं कलात्मक गहराइयों में अवगाहन करने का अवसर प्रदान करना , तथा उनमें समालोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं शोधपरक अभिरुचि का विकास करना है।

यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख सूत्रों – जैसे कि ज्ञान की समग्रता, बहुविषयक एवं अंतर्विषयी दृष्टिकोण , कौशल विकास, भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्मान , तथा मूल्यांकन में सततता एवं पारदर्शिता – को आत्मसात करने का एक विनम्र प्रयास है। इसके माध्यम से शिक्षार्थियों को न केवल अपने विषय में विशेषज्ञता हासिल होगी , अपितु वे एक जागरूक , संवेदनशील और सक्षम नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए भी प्रेरित होंगे। इस संरचना को इस प्रकार से विन्यस्त किया गया है कि यह विद्यार्थियों को रोजगार के विभिन्न अवसरों के लिए तैयार करने के साथ-साथ उच्चतर अकादमिक अध्ययन एवं शोध की सुदृढ़ पृष्ठभूमि भी प्रदान कर सके।

कार्यक्रम परिचय

हिन्दी में त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि कार्यक्रम , शिक्षार्थियों को हिन्दी भाषा के शास्त्रीय एवं समकालीन स्वरूप तथा साहित्य की समृद्ध परम्परा से गहनतापूर्वक परिचित कराने हेतु संकल्पित है। यह पाठ्यक्रम मानव संवेदनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के माध्यम , साहित्य, के सांगोपांग महत्व को उद्घाटित करता है। इसके अध्ययन से शिक्षार्थी न केवल राष्ट्र की संपर्क भाषा हिन्दी के ऐतिहासिक विकास, संरचना एवं समृद्ध वैविध्यपूर्ण साहित्य को आत्मसात करते हैं, अपितु उनमें मौलिक चिंतन , समालोचनात्मक दृष्टि एवं सृजनात्मक प्रतिभा का भी सहज विकास होता है। इस प्रकार, यह कार्यक्रम उन्हें भाषा, साहित्य और संस्कृति के अन्तःसम्बन्धों को समझते हुए एक प्रबुद्ध नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करता है।

बी.ए. हिन्दी के उपरान्त रोजगार की सम्भावनाएँ एवं कार्य क्षेत्र:

हिन्दी में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के मार्ग प्रशस्त होते हैं। पाठ्यक्रम के दौरान अर्जित ज्ञान एवं कौशल (जैसा कि कार्यक्रम परिणामों एवं कार्यक्रम विशिष्ट परिणामों में वर्णित है) उन्हें निम्नलिखित भूमिकाओं एवं कार्य-क्षेत्रों के लिए सक्षम बनाते हैं:

रोजगार के विविध अवसर:

- शिक्षण एवं शोध: विद्यालय , महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी अध्यापक , सहायक आचार्य तथा शोधकर्ता के रूप में।
- पत्रकारिता एवं जनसंचार: समाचार सम्पादक , संवाददाता, फीचर लेखक, समीक्षक के रूप में प्रिंट , इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल मीडिया में।
- अनुवाद एवं भाषान्तरण: सरकारी एवं निजी संस्थाओं में अनुवादक , दुभाषिया तथा विभिन्न भाषाओं के मध्य साहित्यिक एवं तकनीकी सामग्री के भाषान्तरण विशेषज्ञ के रूप में।
- सृजनात्मक एवं विषय-वस्तु लेखन: कवि , कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, पटकथा लेखक , गीतकार तथा वेबसाइट , ब्लॉग, विज्ञापन एवं ई-लर्निंग हेतु हिन्दी में विषय-वस्तु विकसित करने वाले विशेषज्ञ के रूप में।
- राजभाषा कार्यान्वयन: केंद्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों , बैंकों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा अधिकारी, सहायक एवं हिन्दी अनुवादक के पदों पर।
- प्रकाशन उद्योग: प्रकाशन गृहों में सम्पादक , सहायक सम्पादक , प्रूफरीडर, एवं साहित्यिक सलाहकार के रूप में।
- फिल्म एवं दूरदर्शन: पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत रचना एवं भाषा सलाहकार के रूप में।
- कंटेंट मॉडरेशन एवं भाषा विशेषज्ञ: विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स एवं तकनीकी कम्पनियों में हिन्दी भाषा सामग्री के मॉडरेटर एवं भाषा विशेषज्ञ के रूप में।

रोजगार के विविध क्षेत्र:

- शिक्षण एवं अकादमिक संस्थान
- मीडिया हाउस (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टीवी चैनल, रेडियो स्टेशन, वेब पोर्टल)
- प्रकाशन गृह एवं साहित्यिक पत्रिकाएँ
- केंद्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालय एवं विभाग
- बैंक, बीमा एवं अन्य वित्तीय संस्थान
- अनुवाद एवं स्थानीयकरण (Localization) सेवाएँ प्रदान करने वाली एजेंसियाँ
- विज्ञापन, जनसंपर्क एवं कॉर्पोरेट संचार कंपनियाँ
- सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाएँ (गैर-सरकारी संगठन)
- डिजिटल मनोरंजन एवं ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म
- फिल्म उद्योग एवं टेलीविजन प्रोडक्शन हाउस

कार्यक्रम के परिणाम (Programme Outcomes - POs):

इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर शिक्षार्थी निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. साहित्य को मानव संवेदनाओं की मुखर अभिव्यक्ति तथा समाज के दर्पण के रूप में पहचानते हुए उसके समग्र महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।
2. राष्ट्र की सर्वप्रमुख भाषा हिन्दी के उद्भव , विकास एवं उसके अत्यन्त समृद्ध साहित्यिक कोष का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्रदर्शित कर सकेंगे।
3. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं (काव्य , कथा-साहित्य, नाटक, निबंध आदि) के तात्विक एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य को समझते हुए स्वयं की रचनात्मक क्षमताओं का विकास एवं प्रदर्शन कर सकेंगे।
4. हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक पक्ष की समझ विकसित कर आजीविका के विभिन्न क्षेत्रों में उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।
5. साहित्य के अध्ययन को अन्य सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी विषयों (जैसे समाजशास्त्र , मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, इतिहास, पर्यावरण अध्ययन) के परिप्रेक्ष्य में रखकर एक अंतर्विषयी एवं समग्र दृष्टि विकसित कर सकेंगे।
6. संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए हिन्दी साहित्य विषय की आधारभूत एवं अनिवार्य समझ विकसित कर स्वयं को तैयार कर सकेंगे।

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (Programme Specific Outcomes - PSOs):

प्रथम वर्ष स्नातक / कला में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम:

इस पाठ्यक्रम के समापन पर शिक्षार्थी:

- हिन्दी की प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य-धाराओं तथा प्रमुख कथा-साहित्य का आधारभूत परिचय एवं विश्लेषणात्मक समझ विकसित कर चुके होंगे।
- हिन्दी व्याकरण के नियमों , संरचना एवं मानकीकृत स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर चुके होंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से उसका व्यावहारिक उपयोग करने में दक्ष होंगे।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी तथा अपनी क्षेत्रीय संस्कृति एवं भाषा (कुमाउनी/गढ़वाली) के संवर्धनात्मक ज्ञान एवं व्यावहारिक कौशल का अर्जन कर चुके होंगे।
- एक वर्षीय अध्ययन उपरान्त प्रमाणपत्र प्राप्त होने की स्थिति में , अर्जित ज्ञान एवं कौशल का उपयोग आजीविका के अवसरों हेतु कर पाने में अधिक सक्षम होंगे।

द्वितीय वर्ष स्नातक / कला में डिप्लोमा:

इस पाठ्यक्रम के समापन पर शिक्षार्थी:

- हिन्दी के रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियों , प्रमुख कवियों एवं काव्यांगों (रस , छंद, अलंकार) का विस्तृत ज्ञान तथा नाटक एवं अन्य स्मारक गद्य विधाओं की तात्विक समझ विकसित कर चुके होंगे।
- हिन्दी भाषा के विविध रूपों (राजभाषा , राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा , मानक भाषा) तथा उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- हिन्दी पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों एवं कौशलों अथवा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोजनमूलक ज्ञान में प्रवीणता हासिल कर चुके होंगे।
- द्विवर्षीय अध्ययन उपरान्त डिप्लोमा प्राप्त होने की स्थिति में , रोजगार एवं स्व-रोजगार के अधिक परिष्कृत अवसरों के लिए तैयार होंगे।

तृतीय वर्ष स्नातक / कला स्नातक उपाधि:
इस उपाधि वर्ष के सफल समापन पर शिक्षार्थी निम्नलिखित विशिष्ट दक्षताओं एवं ज्ञान से परिपूर्ण होंगे:

क्र.सं.	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम
PSO1	आधुनिक साहित्य का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन: आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों (द्विवेदीयुगीन, छायावादी, प्रगतिवादी-प्रयोगवादी, नयी एवं समकालीन कविता) का तात्विक विवेचन, प्रमुख कवियों के अवदान एवं उनकी कालजयी रचनाओं का समालोचनात्मक अध्ययन करने तथा हिन्दी गद्य की सशक्त विधा 'निबंध' के स्वरूप, विकास-यात्रा, शैलीगत विशेषताओं तथा प्रमुख निबंधकारों के वैचारिक अवदान का गहन ज्ञान अर्जित करने में दक्षता प्राप्त करेंगे।
PSO2	लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक बोध: भारतीय संस्कृति की जीवंत धारा 'लोक-साहित्य' की अवधारणा, उसके विविध अनुशासनों (यथा लोकगीत , लोकगाथा, लोकनाट्य, लोक-प्रकीर्णक) एवं सामाजिक-सांस्कृतिक उपादेयता का विस्तृत परिचय प्राप्त करते हुए उसके संरक्षण एवं अध्ययन की दृष्टि विकसित करेंगे।
PSO3	शोध प्रविधि एवं परियोजना कार्य कौशल: लघु-शोध परियोजना के माध्यम से 'हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली' तथा विभिन्न 'साहित्यिक विचारधाराओं' (यथा भक्ति-आन्दोलन, प्रगतिवाद,

	राष्ट्रवाद, आधुनिकता-बोध, उत्तर-आधुनिकता आदि) में से किसी एक पर केंद्रित परियोजना कार्य द्वारा शोध-प्रविधि के आधारभूत सिद्धांतों , गहन अध्ययन, मौलिक चिंतन, तथ्यों के संकलन , विश्लेषण, निष्कर्ष प्रस्तुतिकरण एवं विश्लेषणात्मक लेखन क्षमता का संवर्धन एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
PSO4	भाषागत दक्षता एवं व्यावसायिक उन्मुखता: तीन वर्षों के समग्र एवं गहन अध्ययन के फलस्वरूप हिन्दी भाषा की संरचनात्मक जटिलताओं, व्याकरणिक परिष्कार, प्रमुख साहित्यिक विमर्शों, कार्यालयी हिन्दी के व्यावहारिक पक्ष एवं पत्रकारिता के रोजगारपरक ज्ञान में परिपक्वता एवं गहन अंतर्दृष्टि विकसित करेंगे।
PSO5	समग्र विकास एवं उच्च शिक्षा हेतु सक्षमता: हिन्दी साहित्य एवं भाषा में अर्जित व्यापक ज्ञान , विकसित समालोचनात्मक दृष्टि एवं शोधपरक अभिरुचि के बल पर उच्चतर अकादमिक अध्ययन (परास्नातक, एम.फिल., पीएच.डी.) तथा विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्रदर्शन हेतु एक सुदृढ़ एवं आत्मविश्वासपूर्ण नींव स्थापित कर सकेंगे , तथा पाठ्यक्रम में सन्निहित नैतिक , सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर एक संवेदनशील , प्रबुद्ध एवं उत्तरदायी नागरिक के रूप में समाज में सकारात्मक योगदान देने हेतु प्रेरित होंगे।

षट्-सत्रीय पाठ्यक्रम संरचना एवं विस्तृत विवरण
सभी छः सत्रों में प्रश्नपत्रों की सूची
हिन्दी में सेमेस्टर-वार प्रश्नपत्रों के शीर्षक
प्रथम वर्ष (कला में प्रमाणपत्र - हिन्दी)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
प्रथम	I	प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
		हिन्दीभाषा : व्याकरण (वैकल्पिक)	सैद्धांतिक	4
		कुमाउनी अथवा गढ़वाली संस्कृति एवं भाषा (कौशल विकास पाठ्यक्रम)	सैद्धांतिक	3
	II	हिन्दी कथा साहित्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
		प्रयोजन मूलक हिन्दी (कौशल विकास पाठ्यक्रम)	सैद्धांतिक	3

द्वितीय वर्ष (कला में डिप्लोमा - हिन्दी)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
द्वितीय	**III**	रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
		हिन्दी भाषा : स्वरूप (राजभाषा , राष्ट्रभाषा, मानक भाषा) (वैकल्पिक)	सैद्धांतिक	4
		प्रयोजन मूलक कुमाउनी अथवा गढ़वाली (कौशल विकास पाठ्यक्रम)	सैद्धांतिक	3
	IV	नाटक एवं स्मारक साहित्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
		हिन्दी पत्रकारिता (कौशल विकास पाठ्यक्रम)	सैद्धांतिक	3

तृतीय वर्ष (कला स्नातक - हिन्दी)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
तृतीय	**V**	द्विवेदी युगीन एवं छायावादी काव्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
		छायावादोत्तर हिन्दी कविता (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
		हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली (परियोजना)	परियोजना	4
	VI	हिन्दी निबंध (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
		लोक साहित्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
		साहित्यिक विचारधाराओं का अध्ययन (भक्ति-आन्दोलन, छायावाद, प्रगतिवाद, राष्ट्रवाद, आधुनिकताबोध, उत्तर आधुनिकता में से कोई एक) (परियोजना)	परियोजना	4

चयनित प्रश्नपत्रों का विस्तृत विवरण:

प्रथम वर्ष: प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (हिन्दी)

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र – I: प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य

(Paper-I: Prachin evam Bhaktikalin Kavya)

- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- क्रेडिट (Credits): 6
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 70 व्याख्यान + 20 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल (आदिकाल) की कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर सकेंगे।
2. चंदबरदाई, जायसी व तुलसी के कृतित्व को समझने के क्रम में महाकाव्य विधा का शिल्पगत परिचय व ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. आदिकालीन वीर काव्य की प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर सकेंगे।
4. भक्ति आन्दोलन के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व को समझते हुए निर्गुण काव्य धारा (ज्ञानमार्गी एवं प्रेममार्गी) व संत साहित्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर सकेंगे।
5. सगुण काव्यधारा तथा उसके अंतर्गत रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति शाखा के महत्वपूर्ण काव्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करने के साथ-साथ सूफी काव्य की विशेषताओं से भी अवगत हो सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	प्राचीन हिन्दी काव्य: परिचय एवं इतिहास (आदिकाल की पृष्ठभूमि , परिस्थितियाँ, प्रमुख धाराएँ एवं कवि)	10
इकाई II	भक्तिकालीन हिन्दी काव्य: भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप, उदय के कारण, प्रमुख सिद्धान्त , निर्गुण काव्य (ज्ञानमार्ग , प्रेममार्ग), सगुण काव्य (रामभक्ति, कृष्णभक्ति), सूफी काव्य	10
इकाई III	चंदबरदाई और उनका काव्य (पृथ्वीराजरासो के 'पद्मावती समय' से चयनित 10 अंशों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)	10
इकाई IV	कबीर और उनका काव्य (कबीर की साखी से विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले 25 दोहे तथा रमैनी से 7 पदों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)	10
इकाई V	जायसी और उनका काव्य (पद्मावत के 'मानसरोदक खण्ड' से 10 चयनित अंशों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)	10
इकाई VI	सूरदास और उनका काव्य (सूरसागर के 'विनय' तथा 'भ्रमरगीत' प्रसंग से दस-दस चयनित पदों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)	10
इकाई VII	तुलसीदास और उनका काव्य (श्रीरामचरितमानस के 'अयोध्या काण्ड' तथा 'विनय पत्रिका' से दस-दस चयनित पदों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)	10
	कुल कक्षा व्याख्यान	70
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि	20
	कुल	**90**

प्रश्नपत्र – II: हिन्दीभाषा : व्याकरण

(Paper-II: Hindi Bhasha: Vyakaran)

- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- क्रेडिट (Credits): 4
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): वैकल्पिक (Elective Paper)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 49 व्याख्यान + 11 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिन्दी की वाक्य-संरचना एवं व्याकरण का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।
3. व्यावहारिक-व्यावसायिक प्रयोजनार्थ हिन्दी भाषा की अत्यन्त समृद्ध शब्द सम्पदा तथा उसकी समाहार-समायोजन शक्ति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक – प्रति पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	वर्ण विचार: हिंदी वर्णमाला (स्वर और व्यंजन), वर्णों का उच्चारण और वर्गीकरण।	07
इकाई II	हिंदी-वर्तनी: हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, शब्द और वर्तनी-विश्लेषण, वर्तनी विषयक अशुद्धियाँ और उनका शोधन।	07
इकाई III	शब्द विचार: व्याकरण के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण (विकारी और अविकारी शब्द)।	07
इकाई IV	हिंदी शब्द रचना: समास, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय, शब्द की परिभाषा, रचना के आधार पर शब्द भेद (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़); इतिहास के आधार पर (तत्सम्, तद्भव, देशी, देशज, विदेशी और संकर शब्द)। अर्थ के आधार पर पर्यायवाची , विलोम और अनेकार्थी शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द।	07
इकाई V	पारिभाषिक शब्द: तात्पर्य , परिभाषा। शब्दों के हिंदी प्रतिपारिभाषिक शब्द , हिंदी पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी प्रतिपारिभाषिक।	07
इकाई VI	विराम चिह्न और उनका प्रयोग।	07
इकाई VII	वाक्य रचना, वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-संश्लेषण, वाक्य-शुद्धि।	07
	कुल कक्षा व्याख्यान	49
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	11
	कुल	60

(यह प्रश्नपत्र अन्य सभी विभागों एवं संकायों के विद्यार्थियों द्वारा वैकल्पिक रूप में चुना जा सकता है)

प्रश्नपत्र – III: कुमाउनी अथवा गढ़वाली संस्कृति एवं भाषा

(Paper-III: Kumauni athwa Garhwali Sanskriti evam Bhasha)

- विषय (Subject): हिन्दी (कौशल विकास) (Hindi - Skill Development)
- क्रेडिट (Credits): 3
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): कौशल विकास पाठ्यक्रम (Skill Development Course)

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र – I: हिन्दी कथा साहित्य

(Paper-I: Hindi Katha Sahitya)

- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- क्रेडिट (Credits): 6
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 70 व्याख्यान + 20 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी की कथा परम्परा का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के आधार पर कहानी विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. कथा-साहित्य की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	हिन्दी में गद्य का आरम्भ: आधुनिक काल।	10
इकाई II	हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास।	10
इकाई III	हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास।	10
इकाई IV	हिन्दी उपन्यास का शिल्प।	10
इकाई V	हिन्दी कहानी का शिल्प।	10
इकाई VI	उपन्यास: *त्याग पत्र* - जैनेन्द्र।	10
इकाई VII	प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँ: *उसने कहा था* (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी), *नमक का दारोगा* (प्रेमचंद), *आकाशदीप* (जयशंकर प्रसाद), *पाजेब* (जैनेन्द्र कुमार), *परदा* (यशपाल), *दोपहर का भोजन* (अमरकान्त), *वापसी* (उषा प्रियंवदा)।	10
	कुल कक्षा व्याख्यान	70
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	20
	कुल	**90**

प्रश्नपत्र – II: प्रयोजन मूलक हिन्दी

(Paper-II: Prayojan Moolak Hindi)

- विषय (Subject): हिन्दी (कौशल विकास) (Hindi - Skill Development)
- क्रेडिट (Credits): 3
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): कौशल विकास पाठ्यक्रम (Skill Development Course)

द्वितीय वर्ष: डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी)

तृतीय सत्र

प्रश्नपत्र – I: रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन

(Paper-I: Ritikalin Kavya evam Kavyang Vivechan)

- कार्यक्रम (Programme): डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Diploma Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): द्वितीय वर्ष / तृतीय सत्र (II Year / III Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन
- क्रेडिट (Credits): 6
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 70 व्याख्यान + 20 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी साहित्य के तीसरे काल 'रीतिकाल' के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन कविता की कला और शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. काव्यांग के अन्तर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. काव्यांग के अन्तर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. काव्यांग के अन्तर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. काव्यांग के अन्तर्गत शब्दशक्ति के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
7.

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	रीतिकाल: परिचय व इतिहास।	05
इकाई II	रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ।	05
इकाई III	प्रमुख रीति कालीन कवि: 1. केशवदास (रामचन्द्रिका से दस चयनित अंश) 2. बिहारी (सतसई से 25 चयनित दोहे) 3. देव (ऋतु वर्णन, शृंगार संयोग-वियोग, भक्ति तथा अध्यात्म के कोई 20 छंद) 4. घनानंद (15 चयनित अंश) 5. भूषण (शिवाजी-महिमा के दस छंद)।	20
इकाई IV	छंद - निम्नांकित छंदों के लक्षण एवं उदाहरण: दोहा , चौपाई, रोला, सोरठा, सवैया, बरवै, गीतिका, हरिगीतिका, कवित्त, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा।	10
इकाई V	अलंकार - निम्नांकित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण: अनुप्रास , यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान, प्रतीप, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति।	10
इकाई VI	रस: रसावयव - स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव, संचारीभाव। रसभेद: श्रृंगार, हास्य, वीर, अद्भुत, करुण, रौद्र, वीभत्स, भयानक, शांत, भक्ति, वात्सल्य रसों के लक्षण एवं उदाहरण।	10
इकाई VII	शब्द शक्तियाँ - शब्द शक्तियों का सामान्य परिचय: अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शैली विज्ञान का संक्षिप्त परिचय।	10
	कुल कक्षा व्याख्यान	70
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	20
	कुल	90

प्रश्नपत्र – II: हिन्दी भाषा : स्वरूप

(Paper-II: Hindi Bhasha: Swaroop)

- कार्यक्रम (Programme): डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Diploma Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): द्वितीय वर्ष / तृतीय सत्र (II Year / III Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): हिन्दी भाषा : स्वरूप
- क्रेडिट (Credits): 4
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): वैकल्पिक (Elective Paper)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 49 व्याख्यान + 11 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी भाषा के विस्तृत व समृद्ध इतिहास व विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी की शैलियों यथा हिन्दी , हिन्दुस्तानी व उर्दू का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे , जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में काम आएगा।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे , जिसके आधार पर वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध कर सकेंगे तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता के साथ कर पाएंगे।
4. राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे , जिसकी आवश्यकता उन्हें सरकारी सेवाओं में होगी।
5. विभिन्न व्यावहारिक व व्यावसायिक प्रयोजनों हेतु हिन्दी के मानकीकृत रूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।
6. कम्प्यूटर व इंटरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरंभिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	हिंदी भाषा का उद्भव और विकास।	07
इकाई II	हिंदी की शैलियाँ- हिंदी, हिंदुस्तानी, उर्दू।	07
इकाई III	हिंदी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ: (1) पश्चिमी हिंदी (2) पूर्वी हिंदी (3) राजस्थानी (4) बिहारी (5) पहाड़ी एवं उनकी बोलियाँ।	07
इकाई IV	राजभाषा, राष्ट्रभाषा, मानकभाषा, सम्पर्कभाषा।	10
इकाई V	हिन्दी और न्यू मीडिया।	05
इकाई VI	देवनागरी लिपि एवं अंक।	07
इकाई VII	निबंध लेखन।	06
	कुल कक्षा व्याख्यान	49
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	11
	कुल	60

(यह प्रश्नपत्र अन्य सभी विभागों एवं संकायों के विद्यार्थियों द्वारा वैकल्पिक रूप में चुना जा सकता है)

प्रश्नपत्र – III: प्रयोजन मूलक कुमाउनी अथवा गढ़वाली

(Paper-III: Prayojan Moolak Kumauni athwa Garhwali)

- विषय (Subject): हिन्दी (कौशल विकास) (Hindi - Skill Development)
- क्रेडिट (Credits): 3
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): कौशल विकास पाठ्यक्रम (Skill Development Course)

चतुर्थ सत्र

प्रश्नपत्र – I: नाटक एवं स्मारक साहित्य

(Paper-I: Natak evam Smarak Sahitya)

- कार्यक्रम (Programme): डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Diploma Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): द्वितीय वर्ष / चतुर्थ सत्र (II Year / IV Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): नाटक एवं स्मारक साहित्य
- क्रेडिट (Credits): 6
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 70 व्याख्यान + 20 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. नाटक की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. नाटक के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक के अध्ययन के आधार पर नाट्यसमीक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. हिन्दी में स्मारक साहित्य लेखन परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. स्मारक साहित्य के स्वरूप व उसकी विधाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. महान साहित्यकारों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को पढ़ने से उच्च जीवन मूल्यों की शिक्षा व प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	नाटक : विधागत स्वरूप, उद्भव एवं विकास।	**10**
इकाई II	जयशंकर प्रसाद कृत *ध्रुवस्वामिनी* (सम्पूर्ण नाटक का अध्ययन एवं आलोचना)।	**10**
इकाई III	स्मारक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप, उद्भव एवं विकास।	**10**
इकाई IV	संस्मरण : *तुम्हारी स्मृति* (माखन लाल चतुर्वेदी), *स्मरण का स्मृतिकार (रायकृष्ण दास)* (अज्ञेय), *दादा स्वर्गीय पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'* (डॉ. नगेन्द्र), *निराला भाई* (महादेवी वर्मा)। रेखाचित्र : *महाकवि जयशंकर प्रसाद* (शिवपूजन सहाय), *मकदूम बख्श* (सेठ गोविन्द दास), *एक कुता और एक मैना* (हजारी प्रसाद द्विवेदी), *ये हैं प्रोफेसर शशांक* (विष्णु कान्त शास्त्री)।	**10**
इकाई V	जीवनी एवं आत्मकथा: स्वरूप, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार।	**10**
इकाई VI	यात्रा वृत्त एवं रिपोर्ताज: स्वरूप, प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार।	**10**
इकाई VII	स्मारक साहित्य की अन्य विधाएँ (जैसे- पत्र साहित्य , डायरी आदि का सामान्य परिचय)।	**10**
	कुल कक्षा व्याख्यान	**70**
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	**20**
	कुल	**90**

प्रश्नपत्र – II: हिन्दी पत्रकारिता

(Paper-II: Hindi Patrakarita)

- विषय (Subject): हिन्दी (कौशल विकास) (Hindi - Skill Development)
- क्रेडिट (Credits): 3
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): कौशल विकास पाठ्यक्रम (Skill Development Course)

तृतीय वर्ष: कला स्नातक उपाधि (हिन्दी)

पंचम सत्र

प्रश्नपत्र – I: द्विवेदी युगीन एवं छायावादी काव्य

(Paper-I: Dwivedi Yugeen evam Chhayavadi Kavya)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / पंचम सत्र (III Year / V Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): द्विवेदी युगीन एवं छायावादी काव्य
- क्रेडिट (Credits): 5
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 65 व्याख्यान + 10 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी के द्विवेदी युग व नवजागरण काल के विषय में ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी कविता के छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. खड़ी बोली हिन्दी की आरम्भिक समर्थ काव्य-परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. पाठ्यक्रम में सम्मिलित छायावादयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. आधुनिक कविता की समीक्षा का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	द्विवेदी युगीन काव्य : युगीन प्रवृत्तियाँ, महत्व और संक्षिप्त इतिहास, काव्यभाषा, काव्यशिल्प, काव्यालोचना।	08
इकाई II	छायावादी काव्य : युगीन प्रवृत्तियों , महत्व और संक्षिप्त इतिहास , काव्यभाषा, काव्यशिल्प और काव्यालोचना।	09
इकाई III	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (निर्धारित कविताएँ: *प्रियप्रवास* से कुछ अंश, *एक बूँद*, *कर्मवीर*)	08
इकाई IV	मैथिली शरण गुप्त (निर्धारित रचना: *पंचवटी* से अंश)।	08
इकाई V	जयशंकर प्रसाद (निर्धारित रचनाएँ: *आँसू* तथा चयनित गीत)।	08
इकाई VI	सुमित्रानंदन पंत (निर्धारित रचनाएँ: *परिवर्तन* तथा *प्रथम रश्मि*)।	08
इकाई VII	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (निर्धारित रचनाएँ: *वंदना*, *जुही की कली* तथा *वह तोड़ती पत्थर*)।	08
इकाई VIII	महादेवी वर्मा (निर्धारित गीत: *धीरे धीरे उतर क्षितिज से* , *बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ*, *मैं नीर भरी दुःख की बदली*, *क्या पूजा क्या अर्चन रे*, *जाग तुझको दूर जाना*)	08
	कुल कक्षा व्याख्यान	65
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	10
	कुल	**75**

प्रश्नपत्र – II: छायावादोत्तर हिन्दी कविता

(Paper-II: Chhayavadottar Hindi Kavita)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / पंचम सत्र (III Year / V Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): छायावादोत्तर हिंदी कविता
- क्रेडिट (Credits): 5
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 65 व्याख्यान + 10 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. छायावादोत्तर हिन्दी कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. आधुनिक हिन्दी कविता में समकालीन कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	प्रगतिवाद: विचार, काव्यप्रवृत्ति, विशेषताएँ, महत्व, प्रमुख कवि।	14
इकाई II	प्रयोगवाद: विचार, काव्यप्रवृत्ति, विशेषताएँ, महत्व, प्रमुख कवि।	08
इकाई III	नयी कविता : विचार, काव्यप्रवृत्ति, विशेषताएँ, महत्व, प्रमुख कवि।	08
इकाई IV	समकालीन हिन्दी कविता: विविध विचार, काव्यप्रवृत्ति, विशेषताएँ, महत्व, प्रमुख कवि।	15
इकाई V	कविताएँ एवं व्याख्या: अज्ञेय (*कलगी बाजरे की*, *यह दीप अकेला*), मुक्तिबोध (*भूल-गलती*, *एक रग का राग*), नागार्जुन (*कालिदास*, *अकाल और उसके बाद*), शमशेर बहादुर सिंह (*सूना सूना पथ है उदास झरना* , *वह सलोना जिस्म*), कुँवर नारायण (*नचिकेता*), भवानी प्रसाद मिश्र (*कहीं नहीं बचे*, *गीतफ़रोश*), सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (*मैंने कब कहा*, *हम ले चलेंगे*), केदारनाथ सिंह (*रचना की आधी रात*, *फ़र्क नहीं पड़ता*)।	20
	कुल कक्षा व्याख्यान	65
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	10
	कुल	**75**

परियोजना: हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
(Project: Hindi ki Vaigyanik evam Takniki Shabdawali)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / पंचम सत्र (III Year / V Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): लघु शोध अध्ययन एवं कार्य-हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
- क्रेडिट (Credits): 4
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): परियोजना (Project)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल घंटे (Total Hours): (4 घंटे प्रति सप्ताह के हिसाब से लगभग 60 घंटे)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस परियोजना कार्य के उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के निर्माण , मानकीकरण एवं प्रयोग के महत्व को समझ सकेंगे।
2. विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी के प्रभावी प्रयोग तथा शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया एवं समस्याओं से अवगत होकर उनके समाधान हेतु अपनी मौलिक दृष्टि विकसित कर सकेंगे।

3. **इकाई-वार विषय-वस्तु एवं घंटे:**

इकाई	विषय	घंटे
इकाई I	वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली: परिभाषा एवं अर्थ। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग - स्थापना, इतिहास, उद्देश्य आदि।	20
इकाई II	वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली चयन एवं निर्माण, प्रक्रिया एवं महत्व।	20
इकाई III	वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली: समस्याएँ और समाधान।	20
	कुल	**60**

षष्ठ सत्र

प्रश्नपत्र – I: हिन्दी निबंध

(Paper-I: Hindi Nibandh)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / षष्ठ सत्र (III Year / VI Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): हिंदी निबंध
- क्रेडिट (Credits): 5
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 65 व्याख्यान + 10 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. निबंध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. सामाजिक व साहित्यिक विषयों से निबंध के वैचारिक सम्बन्ध तथा अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. निबंध के प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधकारों के अध्ययन से विचार के क्षेत्र में मौलिक अभिव्यक्ति का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	निबन्ध विधा - परिचय, स्वरूप, शिल्प तथा प्रकार, उद्भव एवं विकास।	09
इकाई II	बाल कृष्ण भट्ट - (निबंध: *साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है*)।	08
इकाई III	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - (निबंध: *कछुआ धर्म*)।	08
इकाई IV	रामचन्द्र शुक्ल - (निबंध: *कविता क्या है*)।	08
इकाई V	महादेवी वर्मा - (निबंध: *जीने की कला*)।	08
इकाई VI	हजारी प्रसाद द्विवेदी - (निबंध: *अशोक के फूल*)।	08
इकाई VII	हरि शंकर परसाई - (निबंध: *पगडंडियों का ज़माना*)।	08
इकाई VIII	विद्या निवास मिश्र - (निबंध: *अस्ति की पुकार*)।	08
	कुल कक्षा व्याख्यान	65
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	10
	कुल	**75**

प्रश्नपत्र – II: लोक साहित्य
(Paper-II: Lok Sahitya)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / षष्ठ सत्र (III Year / VI Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): लोक साहित्य
- क्रेडिट (Credits): 5
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): मुख्य अनिवार्य (Core Compulsory)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल व्याख्यान (Total Lectures-Tutorials-Practical): 4-0-0 (प्रति सप्ताह) (अर्थात् लगभग 65 व्याख्यान + 10 ट्यूटोरियल/असाइनमेंट/सेमिनार)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस प्रश्नपत्र के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थी:

1. साहित्य के लोकपक्ष का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. लोक साहित्य के स्वरूप , अध्ययन की प्रविधियों , संकलन प्रक्रिया आदि का प्रशिक्षण एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. लोक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. लोकगीतों के स्वरूप , उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. लोक नाट्य के स्वरूप , उसके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. लोककथाओं के स्वरूप , उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
7. लोकगाथाओं के स्वरूप , उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
8. पाठ्यक्रम में सम्मिलित लोक साहित्य के अध्ययन द्वारा लोक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं व्याख्यान:

इकाई	विषय	व्याख्यान संख्या
इकाई I	लोक-साहित्य: परिभाषा , स्वरूप, लोक संस्कृति अध्ययन की प्रक्रिया , संकलन प्रविधि और समस्याएँ।	**15**
इकाई II	लोक-गीत : अर्थ एवं स्वरूप, संस्कार-गीत, व्रत-गीत, श्रम परिहार-गीत, ऋतु-गीत।	**12**
इकाई III	लोक-नाट्य : अर्थ एवं स्वरूप, विविध रूप-रामलीला, स्वांग, यक्षगान, भवाई, नाच, तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कथकली।	**12**
इकाई IV	लोक-कथा : अर्थ एवं स्वरूप , प्रकार: व्रत कथा , परीकथा, नाग-कथा, बोध-कथा, कथानक रूढ़ियाँ एवं अभिप्राय।	**12**
इकाई V	लोक-गाथा: अर्थ एवं स्वरूप , उत्पत्ति, परम्परा, सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्रसिद्ध लोक-गाथाएँ-राजुला मालूशाही, गौरा-माहेश्वरी, तीलू रौतेली।	**14**
	कुल कक्षा व्याख्यान	**65**
	ट्यूटोरियल, सत्रीय कार्य, कक्षा सेमिनार, समूह परिचर्चा आदि।	**10**
	कुल	**75**

परियोजना: साहित्यिक विचारधाराओं का अध्ययन
(Project: Sahityik Vichardharaon ka Adhyayan)

- कार्यक्रम (Programme): डिग्री पाठ्यक्रम (कला) - हिन्दी (Degree Course in ARTS- Hindi)
- वर्ष/सत्र (Year/Semester): तृतीय वर्ष / षष्ठ सत्र (III Year / VI Semester)
- विषय (Subject): हिन्दी (Hindi)
- प्रश्नपत्र शीर्षक (Course Title): लघुशोध अध्ययन एवं कार्य - साहित्यिक विचारधाराओं का अध्ययन
- क्रेडिट (Credits): 4
- अधिकतम अंक (Max. Marks): 25 (आंतरिक) + 75 (बाह्य) = 100
- प्रश्नपत्र की प्रकृति (Nature of Course): परियोजना (Project)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक (Min. Passing Marks): 10 (आंतरिक) + 30 (बाह्य) = 40
- कुल घंटे (Total Hours): (4 घंटे प्रति सप्ताह के हिसाब से लगभग 60 घंटे)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs):

इस परियोजना कार्य के उपरान्त शिक्षार्थी:

1. हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक विचारधाराओं का तात्विक एवं ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. चयनित साहित्यिक विचारधारा पर गहन अध्ययन एवं मौलिक शोध कार्य करने की प्रक्रिया एवं कौशल से परिचित होंगे तथा उच्चस्तरीय शोध हेतु अपनी पूर्व-तैयारी को सुदृढ़ कर सकेंगे।

इकाई-वार विषय-वस्तु एवं घंटे:

इकाई	विषय	घंटे
इकाई I	निम्नांकित विचारधाराओं अथवा साहित्य आन्दोलनों में से किसी एक पर लघुशोधात्मक अध्ययन एवं कार्य करना है: 1. भक्ति-आन्दोलन 2. छायावाद 3. प्रगतिवाद 4. राष्ट्रवाद 5. आधुनिकताबोध 6. उत्तरआधुनिकता। (इसके अंतर्गत विषय चयन , शोध प्रस्ताव, सामग्री संकलन, विश्लेषण, प्रारूप लेखन एवं अंतिम प्रस्तुतिकरण शामिल होगा।)	60
	कुल	**60**

मूल्यांकन पद्धति

- **आंतरिक मूल्यांकन:**
  - **कुल अंक: 25**
  - **आधार: सत्रीय कार्य, सामूहिक परिचर्चा, कक्षा प्रस्तुतियाँ, मौखिक परीक्षा आदि।**
- **बाह्य मूल्यांकन:**
  - **कुल अंक: 75**
  - **आधार: सत्रान्त लिखित परीक्षा।**